

रायबरेली जनपद के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

सत्य प्रकाश चौधरी, डा० ओमप्रकाश यादव

शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज, गोण्डा, उ०प्र०
विभागाध्यक्ष, शिक्षाशास्त्र विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज, गोण्डा, उ०प्र०

Email: satyanet.med@gmail.com, Email: opy1981@gmail.com

सारांश

पर्यावरण मानव जीवन के अस्तित्व एवं विकास का आधार है, किंतु जनसंख्या वृद्धि, औद्योगीकरण, नगरीकरण, प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन, प्रदूषण तथा जलवायु परिवर्तन के कारण पर्यावरणीय समस्याएँ निरंतर गंभीर होती जा रही हैं। ऐसी परिस्थितियों में विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति ज्ञान, संवेदनशीलता, सकारात्मक दृष्टिकोण तथा संरक्षणात्मक व्यवहार विकसित करना आवश्यक है। माध्यमिक स्तर किशोरावस्था का महत्वपूर्ण चरण है, जिसमें विद्यार्थियों के विचार, मूल्य, आदतें और सामाजिक उत्तरदायित्व तेजी से विकसित होते हैं। अतः इस अवस्था में पर्यावरणीय जागरूकता का विकास उन्हें भविष्य में उत्तरदायी एवं पर्यावरण-संवेदनशील नागरिक बनाने में सहायक हो सकता है। प्रस्तुत अध्ययन में रायबरेली जनपद के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत 500 विद्यार्थियों, जिसमें 250 छात्र एवं 250 छात्राएँ सम्मिलित हैं, की पर्यावरण के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। आंकड़ों के संकलन के लिए प्रो० डॉ० एम० राजामनिक्यम द्वारा निर्मित पर्यावरण जागरूकता मापनी का प्रयोग किया गया। अध्ययन के परिणामों के अनुसार छात्रों का पर्यावरणीय जागरूकता का मध्यमान 101.06 तथा छात्राओं का मध्यमान 102.10 पाया गया, जबकि दोनों समूहों के मानक विचलन क्रमशः 10.84 एवं 10.92 रहे। दोनों समूहों के मध्य क्रान्तिक अनुपात 1.06 प्राप्त हुआ, जो 498 स्वतंत्रांश पर .05 सार्थकता स्तर के सारणीमान 1.96 से कम है। अतः छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरणीय जागरूकता में पाया गया अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक नहीं है और निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है। प्रस्तुत अध्ययन का निष्कर्ष इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है कि रायबरेली जनपद के माध्यमिक स्तर पर छात्र एवं छात्राओं दोनों में पर्यावरणीय जागरूकता लगभग समान स्तर की है। इसलिए पर्यावरण शिक्षा को केवल सैद्धांतिक ज्ञान तक सीमित न रखकर जल संरक्षण, वृक्षारोपण, स्वच्छता, कचरा प्रबंधन, ऊर्जा संरक्षण, प्लास्टिक के कम उपयोग तथा जैव-विविधता संरक्षण जैसी व्यवहारात्मक गतिविधियों से जोड़ना आवश्यक है।

मुख्यशब्द – माध्यमिक स्तर, छात्र एवं छात्राएँ, मानसिक स्वास्थ्य ।

प्रस्तावना

मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पर्यावरण से संसाधन प्राप्त करता है और अपने सामाजिक, आर्थिक तथा तकनीकी विकास के माध्यम से पर्यावरण में परिवर्तन भी करता है। प्रारम्भिक अवस्था में मानव की आवश्यकताएँ सीमित थीं और प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग अपेक्षाकृत संतुलित था, परन्तु जनसंख्या वृद्धि, तीव्र औद्योगीकरण, नगरीकरण, परिवहन के विस्तार, कृषि के आधुनिकीकरण तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास ने प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव बढ़ा दिया है। परिणामस्वरूप वर्तमान समय में वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, मृदा प्रदूषण, वनों की कटाई, जैव-विविधता में कमी, जलवायु परिवर्तन, ग्लोबल वार्मिंग, प्लास्टिक प्रदूषण तथा प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन जैसी पर्यावरणीय समस्याएँ गंभीर रूप धारण कर रही हैं। इन समस्याओं का प्रभाव केवल प्राकृतिक परिवेश तक सीमित नहीं है, बल्कि मानव के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं आर्थिक जीवन पर भी पड़ रहा है। इसलिए पर्यावरण संरक्षण के लिए केवल सरकारी नीतियाँ एवं तकनीकी उपाय पर्याप्त नहीं हैं, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति में पर्यावरण के प्रति जागरूकता, संवेदनशीलता और उत्तरदायित्व का विकास आवश्यक है। पर्यावरणीय जागरूकता से आशय व्यक्ति में पर्यावरण, उसके घटकों, पर्यावरणीय समस्याओं, उनके कारणों, परिणामों तथा संरक्षण के उपायों के संबंध में विकसित ज्ञान, समझ, संवेदनशीलता और सकारात्मक दृष्टिकोण से है। पर्यावरण के प्रति जागरूक व्यक्ति न केवल पर्यावरणीय समस्याओं को पहचानता है, बल्कि उनके समाधान में अपनी भूमिका को भी समझता है। वह जल का विवेकपूर्ण उपयोग, ऊर्जा की बचत, वृक्षारोपण, स्वच्छता, कचरा प्रबंधन, प्लास्टिक के कम उपयोग, जैव-विविधता संरक्षण तथा प्राकृतिक संसाधनों के सतत उपयोग जैसे व्यवहारों को अपने दैनिक जीवन में अपनाने का प्रयास करता है। इस दृष्टि से पर्यावरणीय जागरूकता केवल पुस्तकीय ज्ञान का विषय नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के व्यवहार, दृष्टिकोण, मूल्यों और जीवन-शैली से संबंधित व्यापक अवधारणा है। किसी विद्यार्थी को यह जानकारी होना कि वायु प्रदूषण क्या है, पर्यावरणीय ज्ञान का हिस्सा है परन्तु प्रदूषण कम करने के लिए सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करना, अनावश्यक वाहन प्रयोग से बचना और दूसरों को भी जागरूक करना वास्तविक पर्यावरणीय जागरूकता एवं उत्तरदायित्व को प्रदर्शित करता है। वर्तमान समय में पर्यावरणीय संकट की व्यापकता को देखते हुए शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है। शिक्षा व्यक्ति के ज्ञान, दृष्टिकोण, मूल्य एवं व्यवहार को प्रभावित करने वाली एक प्रभावशाली सामाजिक प्रक्रिया है। विद्यालय वह प्रमुख संस्था है जहाँ बालक एवं बालिकाएँ अपने व्यक्तित्व का निर्माण करते हुए सामाजिक एवं पर्यावरणीय उत्तरदायित्वों को समझते हैं। विद्यालयी शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों को प्राकृतिक संसाधनों का महत्व, पर्यावरणीय संतुलन, प्रदूषण के प्रकार, जलवायु परिवर्तन, जैव-विविधता, स्वच्छता एवं संरक्षण संबंधी जानकारी प्रदान की जा सकती है। पाठ्यक्रम में पर्यावरणीय विषयों को सम्मिलित करने के साथ-साथ विभिन्न सह-शैक्षिक गतिविधियों, जैसे वृक्षारोपण, स्वच्छता अभियान, जल संरक्षण कार्यक्रम, पर्यावरण दिवस, पोस्टर प्रतियोगिता, निबंध लेखन, वाद-विवाद, रैली तथा प्रकृति भ्रमण के माध्यम से विद्यार्थियों में पर्यावरणीय चेतना विकसित की जा सकती है। इस अवस्था में विद्यार्थी किशोरावस्था में प्रवेश कर चुके होते हैं और उनके विचार, दृष्टिकोण, मूल्य, रुचियाँ तथा सामाजिक उत्तरदायित्व तेजी से विकसित होते हैं। वे अपने आसपास घटित होने वाली घटनाओं को समझने तथा उनके कारणों और परिणामों पर विचार करने की क्षमता विकसित कर रहे होते हैं। इसलिए माध्यमिक स्तर पर पर्यावरणीय जागरूकता का विकास विद्यार्थियों के भावी जीवन के लिए अत्यंत उपयोगी हो सकता है। यदि इस अवस्था में विद्यार्थियों में प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण तथा पर्यावरणीय उत्तरदायित्व की भावना विकसित हो जाए, तो वे भविष्य में पर्यावरण-संरक्षण के प्रति अधिक जिम्मेदार नागरिक बन सकते हैं। विद्यार्थी अपने परिवार एवं समुदाय में भी पर्यावरणीय व्यवहारों को प्रभावित कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, जल की बर्बादी रोकने,

घर में कचरे का उचित पृथक्करण करने, प्लास्टिक के उपयोग को कम करने तथा पौधारोपण के लिए परिवार के सदस्यों को प्रेरित करने में विद्यार्थी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में पर्यावरणीय समस्याओं का स्वरूप क्षेत्र विशेष के अनुसार अलग-अलग दिखाई देता है। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में पर्यावरणीय परिस्थितियों, संसाधनों की उपलब्धता, जीवन-शैली, औद्योगिक गतिविधियों, परिवहन व्यवस्था तथा जनसंख्या घनत्व में पर्याप्त अंतर पाया जाता है। जनसंख्या वृद्धि एवं विकासात्मक गतिविधियों के कारण जल, वायु, मृदा, हरित क्षेत्र तथा स्वच्छता से संबंधित विभिन्न पर्यावरणीय चुनौतियाँ उत्पन्न हो सकती हैं। ऐसे परिवेश में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि विद्यार्थी अपने स्थानीय पर्यावरण से प्रत्यक्ष रूप से जुड़े होते हैं। वे जल, वायु, मृदा, पेड़-पौधों, कचरा, स्वच्छता तथा प्राकृतिक संसाधनों से संबंधित समस्याओं को अपने दैनिक जीवन में अनुभव करते हैं। स्थानीय पर्यावरणीय परिस्थितियों के प्रति विद्यार्थियों की समझ और उनके संरक्षण संबंधी व्यवहार का अध्ययन भविष्य की पर्यावरणीय शिक्षा के लिए उपयोगी आधार प्रदान कर सकता है। प्रस्तुत अध्ययन में विशेष रूप से छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन किया जाना प्रस्तावित है।

लिंग व्यक्ति के सामाजिक अनुभवों, पारिवारिक भूमिकाओं, शैक्षिक अवसरों, रुचियों तथा सामाजिक सहभागिता को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक माना जाता है। यद्यपि आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में छात्र एवं छात्राओं को समान शैक्षिक अवसर प्रदान करने पर बल दिया जा रहा है, फिर भी उनके अनुभवों एवं सामाजिक परिवेश में अंतर हो सकता है। पर्यावरणीय जागरूकता के संदर्भ में यह जानना आवश्यक है कि क्या छात्र एवं छात्राओं के बीच पर्यावरणीय ज्ञान, दृष्टिकोण, संवेदनशीलता और संरक्षणात्मक व्यवहार में कोई महत्वपूर्ण अंतर विद्यमान है अथवा दोनों समूह लगभग समान स्तर की जागरूकता रखते हैं। पर्यावरणीय जागरूकता का संबंध केवल पर्यावरण विषय के पाठ्यक्रम से नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों के दैनिक जीवन से भी जुड़ी हुई है। जल संकट, वायु प्रदूषण, अत्यधिक तापमान, अनियमित वर्षा, प्लास्टिक कचरा, वृक्षों की कमी और स्वच्छता जैसी समस्याएँ विद्यार्थियों के सामने प्रत्यक्ष रूप से उपस्थित हैं। यदि विद्यार्थी इन समस्याओं के वैज्ञानिक एवं सामाजिक कारणों को समझते हैं, तो वे उनके समाधान के प्रति अधिक सक्रिय हो सकते हैं। इसके विपरीत पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति जानकारी का अभाव या उदासीनता पर्यावरणीय क्षति को बढ़ा सकती है। अतः विद्यालयी स्तर पर पर्यावरणीय शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने तक सीमित न होकर विद्यार्थियों में जिम्मेदार एवं पर्यावरण-अनुकूल जीवन-शैली विकसित करना होना चाहिए। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में सतत विकास, प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण, जलवायु परिवर्तन के प्रति जागरूकता तथा जिम्मेदार नागरिकता को विशेष महत्व दिया जा रहा है। माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों को पर्यावरणीय परियोजनाओं, स्थानीय सर्वेक्षण, विद्यालय परिसर की स्वच्छता, जल संरक्षण, ऊर्जा संरक्षण तथा जैव-विविधता संबंधी गतिविधियों से जोड़कर पर्यावरणीय जागरूकता को व्यवहारात्मक रूप दिया जा सकता है। आज इंटरनेट, टेलीविजन, समाचार पत्र और सामाजिक मीडिया भी पर्यावरणीय जानकारी के प्रमुख स्रोत बन गए हैं। किंतु केवल सूचना प्राप्त करना पर्याप्त नहीं है, विद्यार्थियों में सूचना का वैज्ञानिक मूल्यांकन करने और उसे व्यवहार में लागू करने की क्षमता विकसित करना भी आवश्यक है। प्रस्तुत अध्ययन की आवश्यकता इस तथ्य से भी स्पष्ट होती है कि पर्यावरणीय समस्याएँ लगातार जटिल होती जा रही हैं और इनके समाधान के लिए जागरूक एवं उत्तरदायी नागरिकों की आवश्यकता है। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी भविष्य के नागरिक, अभिभावक, शिक्षक, कर्मचारी, वैज्ञानिक, प्रशासक एवं सामाजिक नेतृत्वकर्ता बनेंगे। उनके वर्तमान पर्यावरणीय दृष्टिकोण और व्यवहार का प्रभाव भविष्य के समाज पर पड़ सकता है। यदि विद्यार्थियों में पर्यावरणीय चेतना मजबूत होगी, तो वे प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और सतत विकास की दिशा में सकारात्मक योगदान दे सकेंगे। इसलिए यह जानना आवश्यक है

कि वर्तमान समय में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं में पर्यावरण के प्रति जागरूकता का स्तर क्या है और क्या दोनों समूहों में कोई सार्थक अंतर पाया जाता है। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष शिक्षकों, विद्यालय प्रशासकों, अभिभावकों, शिक्षा-नीति निर्माताओं तथा पर्यावरणीय संस्थाओं के लिए उपयोगी हो सकते हैं। इसके आधार पर पर्यावरणीय शिक्षा को अधिक प्रभावी, व्यवहारपरक और स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप बनाया जा सकता है। विशेष रूप से यदि छात्र एवं छात्राओं की जागरूकता में अंतर पाया जाता है, तो उस अंतर के संभावित कारणों को समझकर उपयुक्त शैक्षिक एवं सह-शैक्षिक कार्यक्रम विकसित किए जा सकते हैं। अंततः इस प्रकार का अध्ययन विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति ज्ञान, संवेदनशीलता, जिम्मेदारी और संरक्षणात्मक व्यवहार विकसित करने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है तथा एक स्वच्छ, स्वस्थ, संतुलित और सतत पर्यावरण के निर्माण में शिक्षा की भूमिका को अधिक प्रभावी बनाने का आधार प्रदान कर सकता है।

आवश्यकता एवं महत्व

पर्यावरण मानव जीवन का आधार है और वायु, जल, भूमि, वनस्पति तथा जैव-विविधता का संतुलन स्वस्थ एवं सुरक्षित जीवन के लिए आवश्यक है। वर्तमान में वायु एवं जल प्रदूषण, प्लास्टिक कचरे, वनों की कमी, जल-संकट, मृदा प्रदूषण तथा जलवायु परिवर्तन जैसी पर्यावरणीय समस्याएँ निरंतर बढ़ रही हैं। इन समस्याओं का प्रभाव बच्चों एवं किशोरों के स्वास्थ्य, शिक्षा और जीवन-स्तर पर भी पड़ता है। ऐसे में विद्यार्थियों में पर्यावरण संरक्षण, प्राकृतिक संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग, स्वच्छता, ऊर्जा संरक्षण, वृक्षारोपण तथा जैव-विविधता के प्रति जागरूकता विकसित करना शिक्षा का महत्वपूर्ण उद्देश्य बन जाता है। माध्यमिक स्तर किशोरावस्था का वह चरण है जिसमें विद्यार्थियों के विचार, दृष्टिकोण, आदतें और सामाजिक उत्तरदायित्व तेजी से विकसित होते हैं। इसलिए इस स्तर पर पर्यावरण संबंधी ज्ञान एवं जागरूकता का अध्ययन विशेष महत्व रखता है। छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक भूमिकाओं, पारिवारिक परिवेश, अनुभवों तथा विद्यालयी अवसरों में अंतर होने के कारण उनकी पर्यावरणीय जागरूकता के स्तर में भी भिन्नता संभव है। अतः दोनों समूहों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता की तुलना करके यह ज्ञात किया जा सकता है कि क्या लिंग के आधार पर पर्यावरणीय ज्ञान, दृष्टिकोण और व्यवहार में कोई सार्थक अंतर विद्यमान है। रायबरेली जैसे जनपद में, जहाँ ग्रामीण एवं शहरी दोनों प्रकार के क्षेत्र तथा विभिन्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थी पाए जाते हैं, यह अध्ययन स्थानीय परिस्थितियों के संदर्भ में विशेष उपयोगी हो सकता है। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष विद्यालयों में पर्यावरण शिक्षा की प्रभावशीलता को समझने, पाठ्यक्रम एवं सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों को अधिक प्रभावी बनाने तथा विद्यार्थियों में पर्यावरण संरक्षण संबंधी व्यवहार विकसित करने में सहायता कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त यह अध्ययन शिक्षकों, विद्यालय प्रशासकों, अभिभावकों तथा नीति-निर्माताओं को विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता को बढ़ाने के लिए उपयुक्त कार्यक्रम तैयार करने में उपयोगी दिशा प्रदान करेगा। पर्यावरणीय जागरूकता केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित न रहकर व्यवहार में दिखाई दे, जैसे जल की बचत, विद्युत का उचित उपयोग, कचरे का पृथक्करण, प्लास्टिक का कम प्रयोग, स्वच्छता बनाए रखना और पौधारोपण करना, यह आज की प्रमुख आवश्यकता है।

सम्बन्धित शोध साहित्य अध्ययन

अहमद एवं नाजरीन (2020) ने "अलीगढ़ जनपद, उत्तर प्रदेश के राजकीय विद्यालयों में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता की समस्याएँ एवं चुनौतियाँ" विषय पर अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता तथा उससे संबंधित समस्याओं एवं चुनौतियों का अध्ययन

करना था। अध्ययन में छात्र एवं छात्राओं तथा ग्रामीण एवं नगरीय विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया। प्राप्त परिणामों से स्पष्ट हुआ कि विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता का स्तर एक समान नहीं था तथा ग्रामीण एवं नगरीय विद्यार्थियों की जागरूकता में अंतर पाया गया। नगरीय विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक पाई गई। शोधकर्ताओं ने पर्यावरण संरक्षण के प्रति विद्यार्थियों को अधिक संवेदनशील बनाने तथा विद्यालयी शिक्षा में पर्यावरण संबंधी विषयों को प्रभावी रूप से सम्मिलित करने की आवश्यकता पर बल दिया।

गुम्मादी, ब्रह्माजी राव एवं स्वर्णलता (2021) ने "गुंटूर जनपद, आंध्र प्रदेश के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता के स्तर का अध्ययन" विषय पर शोध किया। इस अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता के स्तर का अध्ययन करना तथा लिंग एवं स्थानीयता के आधार पर पर्यावरणीय जागरूकता में अंतर ज्ञात करना था। अध्ययन के परिणामों से ज्ञात हुआ कि विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता में लिंग तथा स्थानीयता के आधार पर सार्थक अंतर पाया गया। शोधकर्ताओं ने सुझाव दिया कि पर्यावरण शिक्षा को केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित न रखकर वृक्षारोपण, स्वच्छता अभियान, जल संरक्षण तथा अन्य व्यावहारिक गतिविधियों से जोड़ा जाना चाहिए।

वेत्साह एवं खिएया (2022) ने "फेक जनपद के माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन" विषय पर शोध किया। इस अध्ययन में 1000 माध्यमिक विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया। विद्यार्थियों की पर्यावरणीय क्षरण, वनों की कटाई, स्थानांतरण कृषि, प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण तथा कचरा निस्तारण से संबंधित जागरूकता का अध्ययन किया गया। परिणामों से पता चला कि विद्यार्थियों में पर्यावरणीय क्षरण, वनों की कटाई तथा प्रदूषण के प्रति जागरूकता उच्च स्तर की थी, जबकि ध्वनि प्रदूषण के प्रति जागरूकता मध्यम तथा कचरे के उचित निस्तारण के प्रति जागरूकता अपेक्षाकृत निम्न थी। अध्ययन में पर्यावरण संरक्षण से संबंधित व्यावहारिक गतिविधियों को विद्यालयी शिक्षा का हिस्सा बनाने की आवश्यकता पर बल दिया गया।

बशीर एवं सहयोगियों (2022) ने "जम्मू एवं कश्मीर के कुलगाम जनपद के माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता, दृष्टिकोण एवं सहभागिता का अध्ययन" विषय पर शोध किया। अध्ययन का उद्देश्य विद्यार्थियों के पर्यावरणीय ज्ञान, पर्यावरण के प्रति दृष्टिकोण तथा पर्यावरण संरक्षण में उनकी सहभागिता का अध्ययन करना था। अध्ययन के परिणामों से स्पष्ट हुआ कि विद्यार्थियों में पर्यावरण संबंधी ज्ञान एवं जागरूकता विद्यमान थी, किंतु पर्यावरण संरक्षण से संबंधित व्यावहारिक गतिविधियों में उनकी सक्रिय सहभागिता को और बढ़ाने की आवश्यकता थी। शोधकर्ताओं ने विद्यालयों में पर्यावरण क्लब, वृक्षारोपण, स्वच्छता अभियान, जल संरक्षण तथा स्थानीय पर्यावरणीय समस्याओं से संबंधित गतिविधियों को बढ़ावा देने का सुझाव दिया।

शास्त्री एवं हथीला (2022) ने "उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन" विषय पर शोध किया। इस अध्ययन का उद्देश्य उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरण संबंधी ज्ञान एवं जागरूकता की स्थिति का अध्ययन करना था। परिणामों से स्पष्ट हुआ कि विद्यार्थियों में पर्यावरण संबंधी सामान्य जानकारी उपलब्ध थी, लेकिन पर्यावरण संरक्षण के व्यावहारिक पक्ष को अधिक मजबूत किए जाने की आवश्यकता है। अध्ययन में यह सुझाव दिया गया कि पर्यावरण शिक्षा को पाठ्यक्रम के साथ-साथ सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों, विद्यालयी कार्यक्रमों तथा स्थानीय पर्यावरण संरक्षण गतिविधियों से जोड़ा जाना चाहिए।

शर्मा एवं कुमारी (2023) ने "माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता विकसित करने में शिक्षकों की भूमिका" विषय पर अध्ययन किया। अध्ययन में लगभग 500 माध्यमिक विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया।

परिणामों से ज्ञात हुआ कि विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता सामान्यतः मध्यम स्तर की थी। विभिन्न शिक्षण विधियों के आधार पर विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता में महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। अध्ययन में शिक्षकों के प्रशिक्षण, शिक्षण-सामग्री की उपलब्धता तथा पाठ्यक्रम में पर्यावरणीय विषयों के प्रभावी समावेशन को आवश्यक माना गया। शोधकर्ताओं के अनुसार शिक्षक विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति ज्ञान, संवेदनशीलता तथा उत्तरदायित्व विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

कुमार एवं सिंह (2023) ने "माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन" विषय पर शोध किया। अध्ययन का उद्देश्य विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना था। इसमें छात्र एवं छात्राओं तथा ग्रामीण एवं नगरीय विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता को ध्यान में रखा गया। अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता विकसित करने में विद्यालयी शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। शोध में पर्यावरणीय जागरूकता को बढ़ाने के लिए पाठ्यक्रम, शिक्षक प्रशिक्षण तथा विद्यालयी गतिविधियों को अधिक प्रभावी बनाने की आवश्यकता पर बल दिया गया।

दिवाकर एवं जोशी (2024) ने "रायबरेली जनपद, उत्तर प्रदेश के माध्यमिक विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता" विषय पर अध्ययन किया। यह अध्ययन वर्तमान शोध के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसका अध्ययन क्षेत्र भी रायबरेली जनपद था। शोध में विभिन्न प्रकार के विद्यालयों में अध्ययनरत माध्यमिक विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन किया गया। परिणामों से संकेत मिला कि विद्यालय का प्रकार, विद्यालय में उपलब्ध आधारभूत सुविधाएँ तथा पाठ्यक्रम संबंधी परिस्थितियाँ विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता को प्रभावित कर सकती हैं।

अज जहरा, सोलिहत एवं रुस्याती (2025) ने "कनिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता का विश्लेषण" विषय पर अध्ययन किया। अध्ययन में विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन किया गया तथा छात्र एवं छात्राओं के बीच तुलना की गई। परिणामों से विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता मध्यम से अच्छी पाई गई। छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरणीय जागरूकता में सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर नहीं पाया गया, यद्यपि छात्राओं का औसत जागरूकता स्तर छात्रों की अपेक्षा कुछ अधिक था। अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि पर्यावरणीय जागरूकता के विकास में केवल लिंग ही निर्णायक कारक नहीं है।

समस्या कथन

रायबरेली जनपद के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. रायबरेली जनपद के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ

1. रायबरेली जनपद के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है।

आंकड़ा संग्रहण के उपकरण प्रस्तुत शोध हेतु आंकड़ों के संकलन के लिए रायबरेली क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों से व्यक्तिगत सम्पर्क करके प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया।

न्यादर्श

वर्तमान शोध हेतु केवल 500 विद्यार्थियों को शामिल किया गया है।

उपकरण

पर्यावरण जागरूकता मापनी – प्रो० डॉ० एम० राजामनिक्यम द्वारा निर्मित प्रश्नावली।

परिकल्पनाओं का परिभाषीकरण

तालिका संख्या – 01

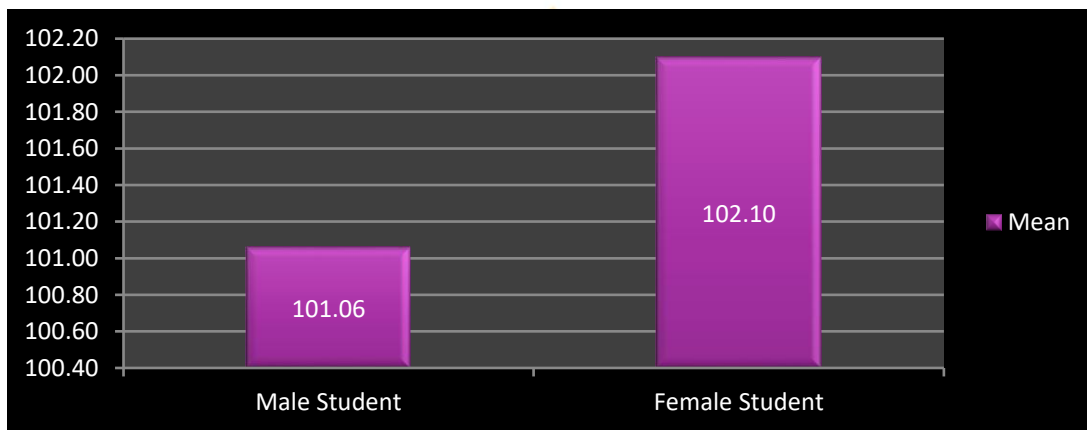
रायबरेली जनपद के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण के प्रति जागरूकता का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात (CR) मान

समूह	संख्या (N)	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	क्रान्तिक अनुपात मान (T-Value)	.05 सार्थकता, df = 498 पर निष्कर्ष
छात्र	250	101.06	10.84	1.06	असार्थक
छात्राएँ	250	102.10	10.92		

परिणाम की व्याख्या :- उपरोक्त तालिका संख्या 01 में रायबरेली जनपद के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत 250 छात्र एवं 250 छात्राओं की पर्यावरण के प्रति जागरूकता प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 101.06 एवं 102.10 है, मानक विचलन क्रमशः 10.84 एवं 10.92 है तथा स्वतंत्रांश 498 के .05 के सार्थकता स्तर पर क्रान्तिक अनुपात का मान 1.06 पाया गया जो कि स्वतंत्रांश 498 के .05 के सार्थकता स्तर के सारणीमान 1.96 से कम है अर्थात् मान सार्थक नहीं है।

दण्डआरेख संख्या –01

मध्यमान का दण्डआरेख



प्रतिपादित परिकल्पना-1 के अन्तर्गत मान के सार्थक होने की स्थिति में शून्य परिकल्पना- H_{01} स्वीकार की जाती है; जो कि यह इंगित करता है कि रायबरेली जनपद के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर विद्यमान नहीं है।

परिणाम की विवेचना :- उपरोक्त परिणाम इंगित करते हैं कि छात्राओं का मध्यमान छात्रों की अपेक्षा थोड़ा अधिक है, परंतु यह अंतर इतना अधिक नहीं है कि इसे वास्तविक अथवा सांख्यिकीय अंतर माना जा सके। यह अंतर नमूने में पाई जाने वाली सामान्य परिवर्तनशीलता के कारण भी हो सकता है। वर्तमान समय में पर्यावरण संरक्षण, प्रदूषण नियंत्रण, जल

संरक्षण, वृक्षारोपण, स्वच्छता तथा प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण से संबंधित जानकारी विद्यार्थियों को विद्यालय, परिवार, जनसंचार माध्यमों तथा विभिन्न सामाजिक जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से प्राप्त होती है। इन गतिविधियों का प्रभाव छात्र एवं छात्राओं दोनों पर लगभग समान रूप से पड़ सकता है। विद्यालयों में पर्यावरणीय शिक्षा को सामान्यतः सभी विद्यार्थियों के लिए समान रूप से उपलब्ध कराया जाता है, जिसके कारण दोनों समूहों की पर्यावरणीय जागरूकता में उल्लेखनीय अंतर उत्पन्न नहीं होता।

निष्कर्ष

1. रायबरेली जनपद के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- वेत्साह, टी., एवं खिएया, के. (2022). फेक जनपद के माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन, अंतरराष्ट्रीय अनुसंधान प्रबंधन एवं प्रौद्योगिकी पत्रिका, 5(1), 1-8।
- शास्त्री, आर., एवं हथीला, जे. (2022). उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन, सृजनात्मक अनुसंधान विचारों की अंतरराष्ट्रीय पत्रिका, 10(9), 1-6।
- शर्मा, आर., एवं कुमारी, एस. (2023). माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता विकसित करने में शिक्षकों की भूमिका, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान पत्रिका, 5(1), 1-8।
- कुमार, ए., एवं सिंह, आर. (2023). माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन, शोधकोष, 2(4), 1-10।
- दिवाकर, एस., एवं जोशी, आर. (2024). रायबरेली जनपद, उत्तर प्रदेश के माध्यमिक विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का एशियाई जर्नल, 15(1), 1-6।
- अज जहरा, एस. ए., सोलिहत, ए., एवं रुस्याती, आर. (2025). कनिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता का विश्लेषण, शैक्षिक अध्ययन पत्रिका, 13(1), 1-10।
- कुमारी, एस., एवं सुमन, एस. (2025). पटना में माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता का मात्रात्मक विश्लेषण, अनुसंधान एवं वैज्ञानिक नवाचार की अंतरराष्ट्रीय पत्रिका, 12(1), 1-8।

Cite this Article:

चौधरी, सत्य प्रकाश, यादव, डा0 ओमप्रकाश (2026) रायबरेली जनपद के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्यय. Adhigamy International Journal of Modern Research Perspectives, ISSN:3139-7522 (Online), Volume 01, Issue 02, Pp.08-15, July-2026. Journal URL: <https://adhigamy.com/>, DOI: <https://doi.org/10.67985/ajimrp.v1i2.02>



This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

Disclaimer/Publisher's Note: The views, findings, and opinions expressed in this publication are solely those of the author(s). The publisher and editorial team are not responsible for any errors, claims, or consequences arising from the use of the published content.